फरवरी: 2025

वर्ष : 8 अंक : 5

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

"छोटी छोटी बातों का आनंद उठाइए, क्योंकि हो सकता है कि किसी दिन आप मुड़ कर देखें तो आपको अनुभव हो कि ये तो बड़ी बातें थीं।" - रॉबर्ट ब्राल्ट

संस्थान का मासिक समाचार, फरवरी 2025 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

हम सभी के लिए फरवरी के महीने का एक विशेष महत्व है। यह अकेला सबसे कम अवधि वाला महीना है जो समान्यतः 28 दिनों का होता है। हालांकि सबसे कम दिन होने पर भी यह एक उल्लास पूर्ण माह माना जाता है। इस माह बसंत ऋतु का आगमन होता है। सर्दियों के बाद आने वाली वसन्त ऋतु में तापमान में नमी आ जाती है और सभी जगह हरे-भरे पेड़ों और फूलों के कारण चारों तरफ हरियाली और रंगीन दिखाई देता है। वसंत ऋतु के आगमन पर सब लोग वसंत पंचमी का त्यौहार मनाते हैं। देश के बहुत से भागों में इस दिन विद्या की देवी "माँ सरस्वती" की पूजा और अर्चना की जाती है।

बसंत ऋतु के आगमन पर किसान नई फसलों के पकने का इंतजार करने लगते हैं। सरसों के पीले-पीले फूल खिल-खिल कर खुशी व्यक्त करते हैं। सरोवरों में कमल के फूल खिल कर इस तरह पानी को छिपा लेते हैं जो हमें यह संकेत दे रहें हैं कि अपने सारे दुखों को समेट कर खुल के जीवन का आनंद ले।

मैं आशा करता हूँ कि जिस प्रकार वसंत ऋतु अच्छी भावनाएं, अच्छा स्वास्थ्य और पौधों को नया जीवन देती है उसी प्रकार हम भी अच्छी भावनाएँ रखें जिससे हमारे जीवन में नई ऊर्जा का संचार हो और हम अपने लक्ष्यों के प्रति अधिक सचेष्ट होकर उन्हे प्राप्त करें।

आइये, हम सभी मिलकर वसंत ऋतु का स्वागत एक नए संकल्प के साथ करें।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन को मजबूत करना है लक्ष्य: श्री जॉर्ज कुरियन का आईसीएआर-सिफ़री का दौरा

श्री जॉर्ज कुरियन, माननीय केंद्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री ने मत्स्य पालन क्षेत्र में चल रहे अनुसंधान और प्रगति की समीक्षा करने के लिए 21 जनवरी, 2025 को आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर -सिफ़री) का दौरा किया।

श्री कुरियन ने पवित्र गंगा में भारतीय मेजर कार्प (अर्थात *गिबेलियन कैटला, लेबियो रोहिता, सिरहिनस मृगला*) के 0.58 लाख उन्नत अंगुलिमीन गांधी घाट, बैरकपुर के गंगा नदी में छोड़कर रैन्चिंग कार्य किया । हमारी पवित्र नदियों के पारिस्थितिक संतुलन को संरक्षित करने के लिए, रैन्चिंग कार्यक्रम, सरकार की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है। मछली के अंगुलिमीनों को सफलतापूर्वक छोड़ना गंगा की जलीय जैव विविधता को पुनर्जीवित करने और स्थायी मत्स्य पालन प्रथाओं को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। सिफ़री की यह पहल, मत्स्य पालन को बढ़ावा देने और मछुआरा समुदायों की आजीविका को बढ़ाने में संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करती है। इसके बाद, श्री कुरियन ने आईसीएआर-सिफ़री परिसर में अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं और सुविधाओं का दौरा किया। अपने दौरे के दौरान, उन्होंने संस्थान के अत्याधुनिक अनुसंधान की जानकारी प्राप्त की और आईसीएआर-सिफ़री में मत्स्य पालन

अनुप्रयोग में ड्रोन प्रौद्योगिकी के प्रदर्शन को देखा। ड्रोन प्रदर्शन के दौरान, माननीय मंत्री ने मछली किसानों, स्थानीय मछुआरों और शोधकर्ताओं के साथ सक्रिय रूप से बातचीत की। उनके अनुभवों, सफलता की कहानियों और उनके दैनिक कार्यों में आने वाली चुनौतियों को सुनते हुए, उन्होंने आईसीएआर-सिफ़री और अन्य हितधारकों से इस ड्रोन-आधारित एप्लिकेशन को मछली किसानों तक पहुँचाने और समग्र पहुँच सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाने का आग्रह किया। इस यात्रा का मुख्य आकर्षण सुंदरबन की 125 मछुआरिनों के साथ विचारपूर्ण बातचीत थी, खास तौर पर पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना के बसंती ब्लॉक की। उन्होंने आपदाओं से जुड़ी प्राकृतिक चुनौतियों और उनकी आजीविका को बढ़ाने के लिए सरकार द्वारा दिए जा रहे सहयोग के बारे में चर्चा की। उन्होंने उत्पादकता और आय बढ़ाने के लिए टिकाऊ प्रथाओं को अपनाने और नई तकनीकों का लाभ उठाने पर भी जोर दिया। इसके अलावा, माननीय मंत्री ने ओडिशा सरकार के मत्स्य विभाग के प्रशिक्षु अधिकारियों के साथ बातचीत की, जिसमें इस क्षेत्र के समग्र विकास के लिए कौशल विकास और ज्ञान के आदान-प्रदान पर जोर दिया गया।

मछुआरों और मछली किसानों के साथ अपनी बातचीत के दौरान, श्री कुरियन ने पिछले एक दशक में भारत के मछली उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि पर प्रकाश डाला, जो 95.79 लाख टन से बढ़कर 175.45 लाख टन हो गया। उन्होंने हाल के वर्षों में पीएमएमएसवाई जैसी विभिन्न योजनाओं के माध्यम से इस क्षेत्र को बेहतर बनाने के लिए सरकार के प्रयासों के बारे में भी बात की। श्री कुरियन ने एचडीपीई-पेन कल्चर, केज कल्चर जैसी प्रौद्योगिकियों के विकास में आईसीएआर-सिफ़री के महत्वपूर्ण योगदान को स्वीकार किया, जिसने मछली कल्चर की धारणा को ही बदल दिया था।

मेघालय के जिलों में सिफ़री केजग्रो (CIFRI-CAGEGROW) को लोकप्रिय बनाने के प्रयास

वैज्ञानिक मछली पालन में पूरक आहार टिकाऊ उत्पादन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इस पृष्ठभूमि में, आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफ़री) ने एक उत्पाद सिफ़री केजग्रो (CIFRI CAGEGROW) विकसित किया है, जो तैरते आकार का मछली आहार है। पूर्वोत्तर क्षेत्र के आदिवासी मछली किसानों के बीच इस आहार को लोकप्रिय बनाने के लिए, सिफ़री, क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने मत्स्य विभाग, मेघालय सरकार के सहयोग से 10.01.2025 को मत्स्य अधीक्षक कार्यालय, री-भोई जिले, मेघालय के प्रशिक्षण हॉल में संस्थान के अनुसूचित जनजाति उपयोजना कार्यक्रम के तहत एक "जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम" का आयोजन किया। इस कार्यक्रम से री-भोई जिले के वंचित मछली किसानों को लाभ मिलने की उम्मीद है। कार्यक्रम का आयोजन सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास, के मार्ग दर्शन में किया गया । श्रीमती ए.एल. मावलोंग, एमसीएस, मत्स्य पालन निदेशक, मेघालय; डॉ. एस.के. माझी, प्रमुख,सिफ़री क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी; श्रीमती मेदा ए खोंगजिलिव, मत्स्य पालन अधीक्षक, री-भोई जिला, मेघालय कार्यक्रम में शामिल हुए । इसका समन्वयन डॉ. प्रोनोब दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक (आयोजन सचिव), डॉ. एस.सी.एस. दास (सह-आयोजन सचिव) और श्री एस. डुंगडुंग, तकनीकी (सदस्य) द्वारा किया गया। श्री ई. लालू, सहायक निदेशक, मत्स्य पालन, मेघालय,; श्री डैनी आर. नोंगशली, मत्स्य प्रदर्शक, री-भोई जिला; श्री सी. नोंग्रू, कार्यक्रम प्रबंधक, री-भोई जिला; कार्यक्रम में री-भोई जिले के मत्स्य पर्यवेक्षक श्री जी. खैरीन भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में मछली पालकों, अधिकारियों, वैज्ञानिकों और मीडिया कर्मियों सहित 70 प्रतिभागियों (22 महिला) ने भाग लिया।

उद्घाटन सत्र के दौरान, श्री डैनी आर. नोंग्शली ने दिन भर के कार्यक्रम के लिए प्रतिभागियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। डॉ. प्रोनोब दास ने कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने मेघालय में विशेष जोर देते हुए पूर्वोत्तर क्षेत्र में मत्स्य पालन के विकास के लिए संस्थान द्वारा किए गए अनुसंधान और विस्तार गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला। कार्यक्रम में डॉ. एस.सी.एस. दास ने सफल वैज्ञानिक मछली पालन में मछली के चारे के महत्व के बारे में बात की और गुणवत्ता वाले बीज और चारे पर जोर दिया। श्री ई. लालू ने अपने संबोधन में आकांक्षी जिले के साथ-साथ राज्य के अन्य जिलों में मत्स्य पालन के विकास के लिए विभिन्न

हितधारकों के सहयोगात्मक कार्य के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने राज्य में मत्स्य पालन के विकास के लिए निरंतर तकनीकी और

इनपुट समर्थन प्रदान करने के लिए आईसीएआर-सिफ़री को धन्यवाद दिया। प्रगतिशील मछली पालकों ने जिले के किसानों के लाभ के लिए इस तरह के अनूठे कार्यक्रम के आयोजन के लिए दोनों संगठनों को धन्यवाद दिया। उन्होंने भविष्य में इस तरह के और अधिक कार्यक्रम आयोजित करने के लिए आईसीएआर-सिफ़री से अनुरोध किया। श्री सी. नोंगरू ने कहा कि आईसीएआर-सिफ़री द्वारा राज्य के विभिन्न भागों में पूर्व में वितरित किए गए सिफ़री केजग्रो फीड ने मछली पालकों को उत्साहजनक परिणाम दिए हैं। उद्घाटन सत्र औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त हुआ। तकनीकी चर्चा के दौरान, डॉ. पी. दास ने संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न उत्पादों और प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया। उन्होंने सिफ़री केजग्रो फ्लोटिंग फीड के वैज्ञानिक गुणों के बारे में भी जानकारी दी। डॉ. एस.सी.एस. दास ने मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए मछली पालन तकनीकों के बारे में संक्षेप में बताया। श्री डैनी आर. नोंगशली ने मेघालय में मत्स्य पालन और जलीय कृषि के लिए विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी दी।

इंटरैक्टिव सत्र के दौरान, वैज्ञानिकों और अधिकारियों ने पहाड़ी जलीय कृषि और खुले पानी के मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर किसानों द्वारा उठाए गए प्रश्नों का उत्तर दिया। उन्होंने प्रतिभागियों से अपनी आजीविका के लिए मछली पालन के वैज्ञानिक तरीकों को अपनाने का आग्रह किया। इस अवसर पर, मेघालय के री-भोई जिले के 50 आदिवासी मछली कृषकों के परिवारों के बीच कुल 5000 किलोग्राम सिफरी केजग्रो फ्लोटिंग फीड वितरित किया गया।

बिहार के सुपौल जिले के मछली पालकों के लिए कौशल विकास एवं क्षमता निर्माण कार्यक्रम

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफ़री), बैरकपुर ने 7 से 13 जनवरी, 2025 के दौरान सुपौल जिले, बिहार के मछली पालकों के लिए "अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर सात दिवसीय कौशल विकास एवं क्षमता निर्माण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया। कार्यक्रम का उद्देश्य मछली उत्पादन और आजीविका में सुधार के लिए स्थायी मत्स्य प्रबंधन में प्रतिभागियों के ज्ञान और व्यावहारिक कौशल को बढ़ाना था। प्रशिक्षण में कुल 30 मछली पालकों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। उद्घाटन कार्यक्रम के दौरान, आईसीएआर-सिफ़री के निदेशक डॉ बि.के. दास ने स्थायी आजीविका सुनिश्चित करने के लिए विशेषज्ञता में सुधार के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने किसानों को अन्तर्स्थलीय जल संसाधनों की क्षमता का प्रभावी ढंग से उपयोग करने और मछली उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ावा देने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रशिक्षण में जल गुणवत्ता प्रबंधन, नर्सरी और तालाब निर्माण, आजीविका बढ़ाने के लिए केज कल्चर, प्रेरित प्रजनन, हैचरी प्रबंधन, सजावटी मछली पालन और विभिन्न पालन प्रणालियों के आर्थिक मूल्यांकन जैसे आवश्यक विषयों को शामिल किया गया। मछली चारा प्रबंधन, रोग नियंत्रण और अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर सत्र भी आयोजित किए गए। कार्यक्रम में विभिन्न सुविधाओं और मछली पालन क्षेत्रों का दौरा भी शामिल था, जो अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के अलग-अलग पहलुओं का व्यावहारिक प्रदर्शन प्रदान करता है। प्रशिक्षुओं ने आईसीएआर-सिफ़री में

रीसर्क्युलेटरी एक्वाकल्चर सिस्टम (आरएएस), सजावटी हैचरी इकाई, गंगा मछली संरक्षण इकाई और मछली चारा मिल का दौरा किया। उन्होंने नैहाटी मछली फार्म और बाजार, हलिसहर मछली फार्म, गालिब स्ट्रीट सजावटी मछली बाजार, आईसीएआर-सीआईएफई कोलकाता केंद्र और पूर्वी कोलकाता वेटलैंड का भी दौरा किया, जिससे उन्हें खुले जल संसाधनों में मछली उत्पादन और प्रबंधन के बारे में अमूल्य जानकारी मिली। प्रशिक्षण का समापन प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र वितरित करने के साथ हुआ, जिन्होंने कार्यक्रम में भाग लेकर अत्यधिक संतुष्टि व्यक्त की।

आईसीएआर-सिफ़री में मछली प्रोटिओमिक्स पर दूसरी कार्यशाला आयोजित

आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा संकाय, शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए 16 से 18 जनवरी 2025 तक बैरकपुर, कोलकाता - 700 120, पश्चिम बंगाल स्थित संस्थान के मुख्यालय में तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

डॉ. बी.पी. मोहंती, पूर्व एडीजी (अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी), नई दिल्ली और सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास, ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और जलीय कृषि में प्रमुख क्षेत्रों को संबोधित करने के लिए मछली प्रोटिओमिक्स प्रौद्योगिकियों और इसकी संभावनाओं की आवश्यकता पर जोर दिया। डॉ. बी.पी. मोहंती ने खाद्य उद्योग, रोग निदान, नैदानिक अध्ययन, बायोमार्कर खोज और दवा खोज में प्रोटिओमिक्स उपकरणों के महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ. दास ने मछली, बैक्टीरिया, कवक या किसी भी जीव या कोशिका प्रकार में प्रोटीन और उनकी सेलुलर गतिविधियों की बातचीत, कार्य, संरचना और संरचनाओं के अध्ययन में प्रोटिओमिक्स प्रौद्योगिकी की भूमिका पर जोर दिया। कार्यशाला पाठ्यक्रम को सुरक्षा, गुणवत्ता और स्वास्थ्य से संबंधित मत्स्य पालन के विभिन्न क्षेत्रों में उनके अनुप्रयोगों के लिए उपलब्ध जैव सूचना विज्ञान संसाधनों के साथ-साथ विभिन्न प्रोटिओमिक्स तकनीकों को कवर करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। प्रतिभागियों को प्रोटीन अलगाव और आकलन, 1 डी जेल वैद्युतकणसंचलन, 2 डी जेल वैद्युतकणसंचलन, प्रोटीन मॉडलिंग (2 डी और 3 डी), और मछली बलगम ज़ाइमोग्राफी पर व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया गया। कार्यशाला में आईसीएआर-केंद्रीय मत्स्य शिक्षा संस्थान, कांचरापाड़ा कॉलेज, पश्चिम बंगाल पशु और मत्स्य विज्ञान विश्वविद्यालय, वीर नर्मद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, मत्स्य महाविद्यालय (ओयूएटी), और भारतीदासन विश्वविद्यालय के स्नातक और स्नातकोंत्तर छात्रों, शोधकर्ताओं और संकायों ने भाग लिया। संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के मार्गदर्शन में श्री पी. मौर्य, डॉ. वी. कुमार, डॉ. एस. रॉय, डॉ. एच.जे. चक्रवर्ती और डॉ. एस. गांगुली ने कार्यशाला का समन्वय किया।

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता 2025: एकता और उत्कृष्टता का उत्सव

आईसीएआर-सिफ़री ने 15-16 जनवरी 2025 को संस्थान मुख्यालय में वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया। संस्थान के मैदान पर आयोजित इस कार्यक्रम में बहुत अधिक भागीदारी, सहयोग और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा देखने को मिली। उद्घाटन के अवसर पर अपने भाषण के दौरान, आईसीएआर-सिफ़री के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने मानव स्वास्थ्य के लिए खेलों के संभावित मानसिक और शारीरिक लाभों पर चर्चा की।

उनके भाषण का एक प्रमुख बिंदु कार्मिकों के बीच टीम भावना और एकजुटता पैदा करने के लिए, इस तरह के खेलकूद के आयोजनों का महत्व था। एथलेटिक्स और क्रिकेट और वॉलीबॉल जैसे टीम खेलों के अलावा, खेलकूद के इस शानदार कार्यक्रम में टेबल टेनिस, शतरंज, बैडमिंटन और कैरम जैसे कई तरह के इनडोर खेल भी शामिल थे। पूरी प्रतियोगिता के दौरान प्रतियोगियों का अटूट जुनून

और एकाग्रता वाकई उल्लेखनीय थी। उत्साहजनक लेकिन प्रतिस्पर्धी माहौल के कारण अच्छी खेल भावना का पूरा प्रदर्शन हुआ। सबसे उल्लेखनीय प्रदर्शनों में रोमांचक क्रिकेट मैच और लुभावनी वॉलीबॉल प्रतियोगिता के साथ-साथ रस्साकशी भी शामिल थी। समापन समारोह का मुख्य आकर्षण पुरस्कार समारोह था। समारोह के समापन के बाद खेल संगठन के सचिव ने कार्यक्रम के आयोजकों और उपस्थित लोगों के प्रति आभार व्यक्त किया। इस वार्षिक खेल कूद प्रतियोगितायों से उत्कृष्टता, आत्म-अनुशासन और सद्भाव को प्रोत्साहित करना ही संस्थान का मिशन है। कार्यक्रम के समाप्त होने पर सभी ने तरोताजा महसूस किया । डॉ. दिवाकर भक्त, डॉ. गुंजन कर्नाटक, श्री कौशिक मंडल, श्री पी.आर. महाता, श्री डी. सिंघा, श्री एस. बनर्जी, श्री एम. रॉय, श्री जयंत प्रमाणिक और सुश्री सुमेधा दास ने सिफ़री रिक्रेयसन क्लब और विस्तार एवं प्रशिक्षण प्रकोष्ठ के सहयोग से समग्र खेलकूद प्रतियोगितायों का समन्वय किया।

केंद्रीय राज्य मंत्री श्री जॉर्ज कुरियन ने ओडिशा के प्रशिक्षु अधिकारियों से विचार-विमर्श किया

ओडिशा के मत्स्य पालन क्षेत्र में उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि के लिए मत्स्य पालन और जलीय कृषि के विभिन्न पहलुओं को संबोधित करने की आवश्यकता है। ओडिशा, अपने विशाल समुद्र तट, नदियों, झीलों और तालाबों के साथ, मछली उत्पादन बढ़ाने की महत्वपूर्ण क्षमता रखता है। ओडिशा सरकार अन्तर्स्थलीय और खारे पानी दोनों क्षेत्रों से मछली उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के साथ-साथ अपने मछुआरों की आजीविका में सुधार करने के लिए भी प्रयास कर रही है।

इस संबंध में, मछली किसानों और मछुआरों को प्रशिक्षण और तकनीकी विशेषज्ञता प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण महत्वपूर्ण है। इसे ध्यान में रखते हुए, ओडिशा के 16 जिलों से 18 महिला अधिकारियों सहित 30 अधिकारियों के लिए 20 से 24 जनवरी, 2025 तक सिफ़री मुख्यालय में पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (मत्स्य निदेहले, ओडिशा प्रायोजित) आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण

मॉड्यूल विशेष रूप से युवा अधिकारियों अर्थात एएफओ के लिए उनकी प्रशिक्षण आवश्यकताओं का आकलन करने के बाद तैयार किया गया था। प्रशिक्षु अधिकारियों की क्षमता निर्माण के लिए कुल सोलह कक्षा सत्र, तीन व्यावहारिक सत्र और एक फील्ड एक्सपोजर दौरा आयोजित किया गया। उद्घाटन सत्र में, सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने युवा अधिकारियों के व्यावहारिक प्रशिक्षण और कौशल विकास की आवश्यकता

पर जोर दिया ताकि वे अपने ज्ञान और कौशल को संबंधित राज्य के मछुआरों तक पहुंचा सकें और उनकी आजीविका में सुधार कर सकें। उद्घाटन के बाद, एक प्रयोगशाला का दौरा किया गया। अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन, मिट्टी और पानी की गुणवत्ता विश्लेषण का महत्व, आम मछली रोग, मछली रोग निदान विधि, बाड़े में मछली रोग प्रबंधन, पेन कल्चर, मत्स्य पालन में जीआईएस अनुप्रयोग आदि जैसे विषयों पर कक्षा ली गई। पूर्वी कोलकाता वेटलैंड का एक फील्ड विजिट किया गया और वहां एक ऑन-फील्ड प्रैक्टिकल सेशन भी आयोजित किया गया। अधिकारियों ने सीआईएफई कोलकाता केंद्र का भी दौरा किया। मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी और अल्पसंख्यक मामले के राज्य मंत्री, भारत सरकार, श्री जॉर्ज कुरियन इस दौरान आईसीएआर-सिफ़री के दौरे पर थे, इसलिए प्रशिक्षुओं को उनके साथ बातचीत करने और मत्स्य पालन से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करने का अवसर मिला, जो वर्तमान परिदृश्य में प्रासंगिक हैं। फीडबैक सत्र में, 90% प्रशिक्षुओं ने अत्यधिक संतुष्टि व्यक्त की और यह उनके करियर को समृद्ध करने के लिए उनके लिए बहुत प्रभावी और उपयोगी प्रशिक्षण कार्यक्रम था।

समापन सत्र के दौरान; सिफ़री के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने सभी प्रतिभागियों को उनके सफल प्रशिक्षण पर बधाई दी और प्रशिक्षण पूर्णता प्रमाण पत्र वितरित किए। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ अपर्णा रॉय और श्री मितेश रामटेके ने श्री सुजीत चौधरी, श्री मनबेंद्र रॉय, डॉ अविषेक साहा और श्री पंकज कुमार की सहायता से किया।

" μ-FTIR के उपयोग द्वारा माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण का आकलन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

माइक्रोप्लास्टिक जलीय पारिस्थितिकी तंत्र में उभरते हुए प्रदूषक हैं और जलीय जीवों और मानव स्वास्थ्य पर संभावित विषाक्त

प्रभाव डालते हैं। हालांकि, अधिकांश शोधकर्ता और हितधारक पर्यावरणीय नमूनों से इसकी पहचान करने की तकनीकों से अनभिज्ञ हैं। इसलिए आईसीएआर-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (सिफ़री) बैरकपुर में "μ-FTIR के उपयोग द्वारा माइक्रोप्लास्टिक प्रदूषण का आकलन" पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया और इसका उद्घाटन आईसीएआर-सिफ़री के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने किया। 13 से 17 जनवरी 2025 तक आयोजित 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य μ- FTIR नामक यंत्र के द्वारा माइक्रोप्लास्टिक विश्लेषण के उन्नत तकनीकों पर ज्ञान प्रदान करना था।

देश के विभिन्न संस्थानों और विश्वविद्यालयों से मत्स्य पालन और प्राणीशास्त्र जैसी विभिन्न शैक्षणिक पृष्ठभूमि वाले छात्रों और शोधार्थियों सहित कुल 12 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इन-हाउस संसाधन व्यक्तियों के अलावा, अन्य राष्ट्रीय संस्थानों जैसे जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता; आईसीएआर-सीआईएफटी, कोच्चि; टीएनजेएफयू, तमिलनाडु और बीआईटी, मेसरा के प्रख्यात शोधकर्ताओं ने ऑनलाइन मोड के माध्यम से व्याख्यान दिए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान पाठ्यक्रम निदेशक डॉ बि.के.दास ने विश्लेषणात्मक उपकरणों के कामकाज के बारे में ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ व्यावहारिक सत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने आग्रह किया कि सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उचित जलीय संसाधन प्रबंधन के लिए माइक्रोप्लास्टिक्स सहित अन्य उभरते प्रदूषकों की निगरानी अनिवार्य है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण नमूना आकार, उचित नमूना तकनीक और सटीक पता लगाने की तकनीक किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने से पहले किसी भी प्रदूषण

आकलन अध्ययन के लिए पूर्वापेक्षाएँ होनी चाहिए क्योंकि इनका समाज पर व्यापक असर होता है। 17 जनवरी 2025 को प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन कार्यक्रम के दौरान आईसीएआर के इनलैंड फिशरीज के पूर्व एडीजी डॉ. बी. पी. मोहंती मौजूद थे। प्रतिभागियों से बातचीत करते हुए डॉ. मोहंती ने जलीय खाद्य सुरक्षा और पोषण सुरक्षा के महत्व पर जोर दिया, साथ ही खाद्य पदार्थों में माइक्रोप्लास्टिक संदूषण के बारे में जन जागरूकता पैदा करने पर विशेष जोर दिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का समन्वय डॉ. ध्रुबा ज्योति सरकार और डॉ. सोमा दास सरकार ने किया।

सिफ़री केजग्रो (CIFRI-CAGEGROW) को मेघालय के पहाड़ी क्षेत्र के छोटे और सीमांत मछली किसानों में लोकप्रिय बनाया गया

आईसीएआर -केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (ICAR-CIFRI), क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ने आर- भोई किसान संघ (RFU), मेघालय के सहयोग से 30.01.2025 को मेघालय के री-भोई जिले के उमबांग, उमसिंग में, टीएसपी कार्यक्रम के तहत एक "जागरूकता-सह-इनपुट वितरण कार्यक्रम" का आयोजन किया, ताकि पहाड़ी क्षेत्र के आदिवासी मछली किसानों के बीच सिफ़री केजग्रो (CIFRI CAGEGROW) को लोकप्रिय बनाया जा सके। सिफ़री केजग्रो (CIFRI CAGEGROW) अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के लिए सिफ़री द्वारा विकसित एक उत्पाद/फ्लोटिंग फिश फीड है। इस इनपुट से क्षेत्र के छोटे मछली किसानों को लाभ मिलने की उम्मीद है। कार्यक्रम का आयोजन सिफ़री बैरकपुर के निदेशक डॉ. बि. के. दास के नेतृत्व में किया गया । डॉ. प्रोनोब दास, वरिष्ठ वैज्ञानिक (आयोजन सचिव), डॉ. एस. सी. एस. दास (सह-आयोजन सचिव) और श्री ए. काकती, तकनीकी (सदस्य) ने कार्यक्रम का समन्वय किया। कार्यक्रम का संचालन श्री डी. माजॉ, अध्यक्ष; श्री के. ब्राइटस्टार, सचिव और श्री एस. के. रिन्जा, कार्यकारी सदस्य, आरएफयू, मेघालय की उपस्थिति में किया गया। इसमें मछली किसानों, एनजीओ अधिकारियों और वैज्ञानिकों सहित 70 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

श्री डी. माजॉ ने प्रतिभागियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और दिन भर के कार्यक्रम का उद्देश्य समझाया। उन्होंने आदिवासी मछली किसानों/मछुआरों की बेहतरी के लिए उमियम जलाशय में सफल केज कल्चर सहित आईसीएआर-सिफ़री और आरएफयू, मेघालय के बीच सहयोगी कार्य के इतिहास के बारे में जानकारी दी। उन्होंने आरएफयू के तहत मछुआरों की आजीविका और आय बढ़ाने के लिए री-भोई जिले के उमसिंग में स्थित नोंग्मिहिर जलाशय में अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के विकास के लिए आईसीएआर- सिफ़री से अनुरोध किया। क्षेत्र के मछली किसानों के लाभ के लिए संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न उत्पादों और प्रौद्योगिकियों पर डॉ. प्रोनोब दास ने चर्चा की। उन्होंने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ाने के लिए सिफ़री केजग्रो फ्लोटिंग फीड के वैज्ञानिक गुणों और उपयोग के बारे में भी जानकारी दी। डॉ. एस.सी.एस.दास ने क्षेत्र के स्थानीय मछली किसानों के लाभ हेतु मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए पहाड़ी मछली पालन तकनीकों के बारे में संक्षेप में बताया। श्री ए. काकाती ने वैज्ञानिक मछली उत्पादन के लिए फ़ीड और खिलाने की प्रासंगिकता के बारे में बताया। कृषक समुदाय की ओर से, सुश्री बानरी एल. नोंग्बरी ने मछली किसानों के लाभ के लिए इनपुट समर्थन (चारा, बीज, नाव, जलाशय मछुआरों के लिए जीवन रक्षक जैकेट आदि) जारी रखने और तकनीकी मार्गदर्शन के लिए आईसीएआर-सिफ़री से अनुरोध किया। श्री के. ब्राइटस्टार ने अपने संबोधन में दोनों संगठनों के बीच सहयोगात्मक कार्य की सफलता की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आईसीएआर-सिफ़री द्वारा पहले वितरित किए गए सिफ़री केजग्रो फीड ने छोटे और सीमांत मछली किसानों को लाभ पहुँचाते हुए उत्साहजनक परिणाम दिए हैं। सिफ़री के वैज्ञानिकों ने भी मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर किसानों से बातचीत की। इस अवसर पर, क्षेत्र प्रदर्शन के लिए इलाके के 50 चयनित आदिवासी मछली किसानों के परिवारों के बीच कुल 5000 किलोग्राम सिफ़री केजग्रो फ्लोटिंग फीड वितरित की गई। कार्यक्रम का समापन श्री एस. के. रिन्जा द्वारा प्रस्तुत औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- सर्वेक्षण से पता चला है कि नर्मदा नदी के ऊपरी भाग में गैर-देशी मछली प्रजातियों की आबादी बढ़ रही है। सर्दियों के मौसम में कॉमन कार्प की पकड़ चरम पर होती है, जिसमें एक मछुआरा प्रतिदिन 5-7 किलोग्राम मछली पकड़ता है। नदी से *हाइपोफथाल्मिचथिस नोबिलिस, पैंगसियानोडोन हाइपोफथाल्मस* और *ओरियोक्रोमिस निलोटिकस* की पकड़ की भी सूचना मिली है, जो गंभीर चिंता पैदा पैदा करता है।
- चार राज्यों (अर्थात उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल) से चयनित स्थलों की गंगा नदी से कुल मछली की अनुमानित मात्रा 80.24 टन थी। दिसंबर 2024 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से मछली की अनुमानित मात्रा 9.89 टन थी, जो दिसंबर 2023 में प्राप्त मछली पकड़ से कम थी।
- झारखंड के रामगढ़ जिले के परित्यक्त तेल कोयला खदानों में घुलित ऑक्सीजन के स्तर में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई, जो सतह पर 5 पीपीएम से अधिक से नीचे 1 पीपीएम से कम हो गई। ऑक्सीजन की यह कमी पंगास और तिलापिया को छोड़कर अन्य उच्च मूल्य वाली मछलियाँ जिनको ऑक्सीजन की मांग रहती है वो प्रजातियों की पैदावार एक चुनौती बन गई है।
- पश्चिम बंगाल के विभिन्न स्थलों पर 'राष्ट्रीय पशुपालन मिशन-III' के तहत चार नदी पशुपालन कार्यक्रम आयोजित किए गए, जहाँ 5.71 लाख फिंगरलिंग छोड़े गए। 21 जनवरी 2025 को बैरकपुर, पश्चिम बंगाल में भारत सरकार के अल्पसंख्यक मामलों और मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री (एमओएस) श्री जॉर्ज कुरियन द्वारा लैबियो बाटा की 0.58 लाख मछलियों को रैंचिंग भी किया गया।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने 30 दिसंबर 2024 को कॉर्पस फंड समीक्षा बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने 17-19 जनवरी, 2025 के दौरान ओडिशा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (ओयूएटी), भुवनेश्वर, ओडिशा में खाद्य सुरक्षा और पोषण के लिए कृषि पर 7वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (एग्री विजन-2025) में भाग लिया।
- संस्थान के वैज्ञानिकों ने 09-10 जनवरी, 2025 के दौरान भारत के उमियम, मेघालय में उत्तर पूर्वी पहाड़ी क्षेत्र के लिए आईसीएआर अनुसंधान परिसर के स्वर्ण जयंती समारोह में भाग लिया।
- सिफरी और भारतीय स्टेट बैंक ने 10 जनवरी 2025 को "सुंदरबन में सतत आजीविका के लिए बैकयार्ड तालाब पालन" पर सीएसआर परियोजना के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। बैकयार्ड तालाब पालन की इस पहल के तहत एक मॉडल गांव के 100 परिवारों को गोद लिया जाएगा।
- संस्थान द्वारा 16-31 दिसंबर 2024 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया है। पखवाड़े के हिस्से के रूप में, इस अवसर पर निदेशक, सिफरी, बैरकपुर द्वारा स्वच्छता शपथ भी दिलाई गई।
- आईसीएआर-सिफरी के निदेशक और वैज्ञानिकों ने 18 मार्च 2025 को आईसीएआर-सीआईएफई, मुंबई में आयोजित मत्स्य जैव प्रौद्योगिकी पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लिया।

अन्य कार्यक्रम

- संस्थान में "राष्ट्रीय विज्ञान दिवस – 2025" मनाया गया, जिसमें 28 फरवरी, 2025 को आर्मी पब्लिक स्कूल, बैरकपुर के 100 छात्रों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया गया, जहां उन्हें विज्ञान से संबंधित विषयों, विशेष रूप से मत्स्य विज्ञान में अपने भविष्य के करियर को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया गया और सत्र के बाद सीआईएफआरआई की सजावटी मछली पालन इकाई, बायोफ्लोक इकाई, आरएएस प्रणाली के साथ-साथ संस्थान की विभिन्न प्रयोगशालाओं का दौरा किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- 14-18 जनवरी, 2025 के दौरान किसानों के लिए मत्स्य निदेशालय, ओडिशा प्रायोजित प्रशिक्षण सह एक्सपोजर दौरा आयोजित किया, जिसमें मत्स्य विभाग, ओडिशा के 29 सहायक मत्स्य अधिकारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
- 20-24 जनवरी, 2025 के दौरान किसानों के लिए मत्स्य निदेशालय, ओडिशा प्रायोजित प्रशिक्षण सह एक्सपोजर दौरा आयोजित किया, जिसमें मत्स्य विभाग, ओडिशा के 29 सहायक मत्स्य अधिकारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 21-25 दिसंबर, 2024 के दौरान श्री श्रीक्षेत्र सूचना, पुरी द्वारा आयोजित 22वीं राष्ट्रीय कृषि प्रदर्शनी में भाग लिया, जो पुरी, ओडिशा में आयोजित की गई।
- 22-31 दिसंबर, 2024 के दौरान ताल्दी, दक्षिण 24 परगना, सुंदरबन, पश्चिम बंगाल में ताल्दी बोहुरूपी संघ द्वारा आयोजित सुंदरबन युवा मेले में भाग लिया।
- आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 24 दिसंबर, 2024 को एटीएमए, समस्तीपुर के तहत समस्तीपुर, बिहार के 40 किसानों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया, जिसमें किसानों को संस्थान और अन्तर्स्थलीय खुले पानी में मत्स्य पालन से संबंधित विभिन्न आधुनिक और वैज्ञानिक प्रथाओं के बारे में प्रारंभिक जानकारी प्रदान की गई।

- आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 26-29 दिसंबर, 2024 के दौरान डब्ल्यूबीयूएएफएस, डब्ल्यूबी द्वारा डब्ल्यूबीयूएएफएस, बेलगाचिया, कोलकाता, डब्ल्यूबी में आयोजित तीसरे ए.पी.सी. रॉय स्मारक विज्ञान मेला ओ प्रदर्शनी में भाग लिया।

- आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 26-28 दिसंबर, 2024 के दौरान फकीर मोहन विश्वविद्यालय, बालासोर, ओडिशा द्वारा बालासोर, ओडिशा में आयोजित ओडिशा अनुसंधान सम्मेलन 2024 में प्रदर्शनी में भाग लिया।

- आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 06-08 जनवरी, 2025 के दौरान अलुकरनबाढ़, कोंटाई, पूर्वी मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल में आयोजित अलुकरनबाढ़ सेवा संघ द्वारा बाजपुर ग्रामीण प्रदर्शनी ओ मेला एबोंग महोत्सव में प्रदर्शनी में भाग लिया।

- 07 जनवरी, 2025 को आईसीएआर-सीआरआईजेएएफ, बैरकपुर द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत 14 प्रशिक्षु-किसानों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन किया, जहां उन्हें संस्थान के बारे में प्रारंभिक उन्मुखीकरण और उनकी आजीविका में सुधार के लिए मत्स्य पालन गतिविधियों का अभ्यास करने के वैज्ञानिक तरीके प्रदान किए गए।

- आईसीएआर-सीआईएफआरआई ने 08 जनवरी, 2025 को एटीएमए, नवादा के तहत समस्तीपुर, बिहार के 40 किसानों के लिए एक एक्सपोजर विजिट का आयोजन कियागया।

- संस्थान के वैज्ञानिकों ने 11-14 जनवरी, 2025 के दौरान सारगाची, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल में धन्यगंगा केवीके, रामकृष्ण मिशन आश्रम, सारगाची द्वारा आयोजित एकीकृत कृषि प्रणाली पर 5वें कृषि समृद्धि मेला सह राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।

- संस्थान ने मत्स्य विभाग, त्रिपुरा सरकार के सहयोग से 24 दिसंबर 2024 को उदयपुर, गोमती जिले, त्रिपुरा में बाढ़ प्रभावित मत्स्य किसानों के बीच जागरूकता-सह-वितरण का आयोजन किया।

- **अन्य**

- संस्थान ने गंगा नदी के विभिन्न क्षेत्रों में डॉल्फ़िन, हिल्सा और महासीर संरक्षण पर ग्यारह जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए, जिसमें स्थानीय लोगों और मछुआरों सहित 576 प्रतिभागियों को जागरूक किया गया।

- संस्थान ने एनएमसीजी परियोजना के तहत कुलटोली, सुंदरबन, पश्चिम बंगाल में 20 से 29 दिसंबर 2024 तक कुलटोली मिलन तीर्थ सोसाइटी द्वारा आयोजित 28वें सुंदरबन कृषि मेला ओ लोको संस्कृति उत्सव में भाग लिया और प्रदर्शनी में प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

- संस्थान ने 09-10 जनवरी, 2025 के दौरान भारत के उमियाम, मेघालय में आईसीएआर के पूर्वोत्तर पर्वतीय क्षेत्र अनुसंधान परिसर के स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर प्रदर्शनी में भाग लिया। किसानों, उद्यमियों, वैज्ञानिकों और अन्य विशिष्ट अतिथियों के बीच संस्थान की अनुसंधान गतिविधियों और प्रौद्योगिकियों पर जानकारी प्रदर्शित और प्रसारित की। महामहिम, मेघालय के माननीय राज्यपाल, श्री चंद्रशेखर एच. विजयशंकर; भारत के माननीय केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री, श्री शिवराज सिंह चौहान; मेघालय के माननीय मुख्यमंत्री, श्री कॉनराड के. संगमा; माननीय महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अध्यक्ष डॉ. हिमांशु पाठक ने सीआईएफआरआई प्रदर्शनी स्टाल का दौरा किया।

- महिला मत्स्यजीवी दिवस 26 दिसंबर 2024 को कुलतली, सुंदरवन, पश्चिम बंगाल में आयोजित किया गया। इसमें 5000 से अधिक महिला मछुआरों ने भाग लिया। बैकयार्ड मछली पालन के माध्यम से आजीविका बढ़ाने वाली गतिविधियों के तहत सीआईएफआरआई द्वारा 500 महिलाओं को अपनाया गया।

- प्रयागराज में संस्थान द्वारा एनएमसीजी के तहत आयोजित महाकुंभ में प्रदर्शनी स्टाल सफलतापूर्वक प्रदर्शित किया जा रहा है, यह स्टाल नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत चल रहे प्रयासों पर प्रकाश डालता है, जिसका उद्देश्य गंगा नदी और उसके पारिस्थितिकी तंत्र का संरक्षण और कायाकल्प है।

- फरक्का अपस्ट्रीम में कुल 3738 हिल्सा मछलियों का पालन किया गया, जिनमें से 98 नमूनों को प्रवासी पथ को समझने के लिए टैग किया गया। पालन के दौरान हिल्सा का रिकॉर्ड किया गया वजन 21.6 ग्राम (न्यूनतम) से 255 ग्राम (अधिकतम) पाया गया।

- पेटेंट आवेदन संख्या 202531000939 जिसका शीर्षक है "फ्लेवोबैक्टीरियम कॉलमनेरे की वृद्धि के लिए प्रजाति-विशिष्ट मीडिया का विकास" 04 जनवरी 2025 को दायर किया गया।

- कॉपीराइट डेयरी संख्या 439/2025-CO/L, जिसका शीर्षक है "गंगा नदी में मछली पकड़ और मछुआरों का सामाजिक-अर्थशास्त्र" 06 जनवरी, 2025 को दायर किया गया।

- कॉपीराइट डेयरी संख्या 2322/2025-CO/L, जिसका शीर्षक है "लघु-स्तरीय जलीय कृषि में महिलाएँ: सुंदरबन की सफलता की कहानियाँ", कॉपीराइट डेयरी संख्या 2350/2025-CO/L, जिसका शीर्षक है "सुंदरबन के मछली पकड़ने वाले समुदायों की सफलता की कहानियाँ" और कॉपीराइट डेयरी संख्या 2385/2025-CO/L जिसका शीर्षक है "भारत में जीनस मिस्टस की सूची" 22 जनवरी, 2025 को दायर किया गया।

सिफरी : समाचार पत्रों के माध्यम से

BUSINESS/COMMERCE

River Ranching Initiative by ICAR-CIFRI at Dui Paisa Ghat, Monirampur, Ganga River

Kolkata,(KCN): ICAR-CIFRI conducted a river ranching program at Dui Paisa Ghat, Monirampur on the Ganga River, focusing on enhancing fish populations and maintaining ecological balance. The event was inaugurated by Dr. (Mrs.)

B. Meenakumari, former DDG (Fy. Sc.) and Chairman of the Research Advisory Committee (RAC) of ICAR-CIFRI, alongside distinguished RAC members, including Dr. A.K. Singh, former director of ICAR-DCFR, as well as institute divisional heads, scientists, and staff.

Under National Ranching Mission III, 1 lakh 70 thousand fingerlings (50 thousand L. Bata and 1 lakh 20 thousand IMC) have been released into the Ganga River. This program is consistent with ICAR-CIFRI's objective to promote sustainable fisheries and rehabilitate natural fish populations in inland water bodies. The RAC Chairman highlighted the significance of river ranching in enhancing fishery resources and supporting the livelihoods of the local fishing community.

Dr. B. K. Das, Director of ICAR-CIFRI, highlighted the significance of river ranching in the augmentation of inland fisheries resources. He asserted that stock enhancement through ranching is essential for revitalising fish populations in rivers. ICAR-CIFRI has led initiatives that prioritise a scientific methodology for managing fisheries resources. This initiative will benefit local fishers and contribute to the ecological integrity of the Ganga River. ICAR-CIFRI experts emphasised the ecological advantages of these programs which promote biodiversity conservation and enhance fish productivity. The event witnessed active involvement from local fishermen, stakeholders, and researchers, underscoring ICAR-CIFRI's dedication to the sustainable management of inland fisheries.

…wering Rural Women Through Small-Scale …ies in South 24 Parganas

enhances household incomes but also ensures better nutritional security through protein-rich fish consumption. In order to …

programme was organised by the Institute in collaboration with Sasya Shyamala Krishi Vigyan Kendra, …

were distributed to 100 SC women belonging to 4 GPs of Sonarpur Block having pond size of 0.02 to 0.04 ha under SCSP programme …

Chairman, SSKVK addressed the gathering and praised the ICAR-CIFRI initiative for empowering rural women by improving livelihood through demonstration of various fisheries technology. Dr. B. K. Das, Director, ICAR-CIFRI, Barrackpore, sensitized the gathering on the inland open water fisheries technology …

…wareness Campaign for Hilsa Conservation: An ICAR-CIFRI Initiative

…a, (KCN): In a …ant move towards …ble fisheries and …ronmental …vation, ICAR-… Inland Fisheries … Institute (ICAR-…), Barrackpore … an awareness … on Hilsa … under the … Mission for Clean … (NMCG). The … spearheaded by … Das, Director of … CIFRI and … Investigator of … CG project, saw … tion from over 80 … women, and … at Chandan Nagar … Bhadreshwar, … y. The primary … of the campaign … educate local … communities on … able fishing … and to emphasize … ecological and … ic importance of … Fishers were … about … sible fishing … ques, including … ce to seasonal … bans during

breeding periods, usage of eco-friendly fishing gear, and avoiding the capture of juvenile Hilsa. These measures are essential for ensuring the long-term sustainability of Hilsa populations and securing the livelihoods of fishing communities.

A key highlight of the campaign was the active involvement of women in alternative income-generating activities. Training sessions were conducted on value addition, hygienic fish processing, and aquaculture-based entrepreneurship, equipping them with skills to supplement household incomes sustainably.

The campaign also focused on children, recognizing their role as future stewards of conservation efforts. Through interactive sessions, children were educated on the importance of Hilsa preservation, ensuring that conservation awareness permeates into households and contributes to long-term behavioral change.

The Hilsa Awareness Campaign, through its inclusive approach, reinforces the need for community participation in conservation efforts. By engaging fishers, women, and children, the initiative strengthens the commitment to sustainable Hilsa fisheries, ensuring both environmental protection and economic stability for future generations.

সিফরির উদ্যোগে কুলতলিতে গরিব মহিলা মৎস্যচাষিদের ট্রেনিং

বিশেষ সংবাদদাতা, বাসন্তী : রাজ্যে মিষ্টি জলের মাছ চাষের অন্যতম এলাকা হিসাবে চিহ্নিত সুন্দরবন। এই অঞ্চলের লোকদের জীবিকার অন্যতম উৎস একবার মাত্র ধান চাষ। তাও প্রতিবারে বন্যা, খরা, অতিবৃষ্টি, ঘূর্ণিঝড়ে ফসল …

সুন্দরবন অঞ্চলে প্রায় ৫ হাজার পরিবারকে ট্রেনিং ও ইনপুট দিয়ে কেন্দ্রীয় অন্তঃস্থলীয় মৎস্য গবেষণা সংস্থা সাহায্য করেছে। যার ফলে এখানে মাছ চাষে আগ্রহ বাড়ছে।

আইসিএআর- কেন্দ্রীয় অন্তঃস্থলীয় মৎস্য গবেষণা কেন্দ্র, সিফরী-র ৭৯তম প্রতিষ্ঠা দিবস উদযাপন অনুষ্ঠানে সহকারী প্রশাসনিক প্রধান, আইআরডিএম ফ্যাকাল্টি সেন্টার এবং সহ-সভাপতি, বিজ্ঞান উপদেষ্টা কমিটি, শস্য শ্যামলা কৃষি বিজ্ঞান কেন্দ্র, রামকৃষ্ণ মিশন বিবেকানন্দ শিক্ষা ও গবেষণা প্রতিষ্ঠান, আরকেএমভিইআরআই বেলুড় মঠ, হাওড়া, সিএসআইআর-ইন্ডিয়ান ইনস্টিটিউট অব কেমিক্যাল বায়োলজি, কলকাতার ডিরেক্টর অধ্যাপক বিভা টান্ডন, আইসিএআর-কেন্দ্রীয় সামুদ্রিক মৎস্য গবেষণা প্রতিষ্ঠান (সিএমএফআরআই), কোচির প্রাক্তন অধিকর্তা ড. এ গোপালকৃষ্ণন, আইসিএআর-এটিএআরআই, কলকাতার অধিকর্তা ড. প্রদীপ দে, কুলতলি মিলনতীর্থ সোসাইটি, সুন্দরবনের প্রতিষ্ঠাতা ও সভাপতি লোকমান মোল্লা, আইসিএআর-সিফরীর অধিকর্তা ড. বসন্তকুমার দাস। উত্তর ২৪ পরগনার বারাকপুরে সদর কার্যালয়ে।

… আধুনিক প্রযুক্তি … মাধ্যমে স্বনির্ভর … বিরের উদ্বোধন … মার দাস বলেন, … র্ভর। তা সত্ত্বেও … ৫ বছর আগে … াম। আপনারা … ধুনিক প্রযুক্তির … ন কখনো সম্ভব …

গোসাবা পর্যন্ত ৫ হাজার মৎস্যজীবী পরিবারকে আমরা সাহায্য করার চেষ্টা করেছি। আগামী আর্থিক বছরে আরো ১ হাজার পরিবারকে আমরা আমাদের প্রকল্পের অধীনে আনার চেষ্টা করব। কিন্তু আপনাদের কথা দিতে হবে, পুকুরে মাছ চাষ করে মাছ বিক্রি করে ব্যাঙ্কে টাকা জমা করতে হবে। আবার দরকার পড়লে ওই টাকায় মাছ চাষ করতে হবে। মনে রাখতে হবে এটি ধারাবাহিক প্রক্রিয়া। এর মাধ্যমে স্বনির্ভর হওয়া সম্ভব। আমাদের পক্ষে দ্বিতীয় বার সাহায্য করা সম্ভব হবে না।' লোকমান মোল্লা বলেন, 'সুন্দরবনে এক ফসলি চাষের পাশাপাশি বাসিন্দাদের একাংশ মাছ চাষের ওপর নির্ভরশীল। কিন্তু নয়া প্রযুক্তির ট্রেনিং না থাকায় ধান চাষের মতো মাছ চাষও মার খাচ্ছে। ফলে এখানের লোকরা দিশাহারা। বিকল্প কর্মসংস্থানের কোনো পথ নেই।' কেন্দ্রীয় সংস্থার প্রধান বিজ্ঞানী ড. অর্চন কান্তি দাস বলেন, 'আমি বিশ্বাস করি, আমাদের প্রযুক্তি ও ট্রেনিংয়ে মাধ্যমে সুন্দরবনের মা-বোনেরা স্বনির্ভর হবেন।' প্রজেক্ট সায়েন্টিস্ট শ্রেয়া ভট্টাচার্য বলেন, 'একদিকে রঙিন মাছ চাষ অন্যদিকে পুকুরে মিষ্টি জলের মাছ চাষ যদি পদ্ধতিগতভাবে করা যায় তাহলে আগামী দিনে সুন্দরবনের মায়েদের মুখে হাসি ফুটবে।' মহিলা মৎস্যচাষি সান্ত্বনা ভৌমিক, পম্পা নস্কর ও দুর্গা মণ্ডল জানান, 'সিফরি ও কুলতলী মিলান দ্বিতীয় সোসাইটির সহায়তায় আমরা মাছের চারা পোনা, মাছের খাদ্য ও চুন পেয়ে পুকুরে মাছ চাষ করে সারা বছর প্রায় কয়েক হাজার টাকা আয় করেছি।'

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, (आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है